

॥ ओ३म् ॥

श्री गणपति का रहस्य



~ गगन गुप्ता



श्री गणपति का रहस्य

लेख • द्वितीय संस्करण

लेखक
गगन गुप्ता

सम्पादक
सनातन अनुसंधान संगठन (SRO)

प्रकाशक-संरक्षक
सत्य संवाहक, वैदिक फ़िज़िविस



विषय सूची

<u>विषय</u>	<u>पृष्ठ संख्या</u>
• परिचय	०१
• पुराणों में गणपति	०३
• ईश्वर गणपति है	०६
• ऐतिहासिक महापुरुष गणपति	१०
• अग्नि गणपति है	१३
• गणपति परिवार	१६
• गणपति प्रतिमा का सन्देश	२१
• उपसंहार	२६

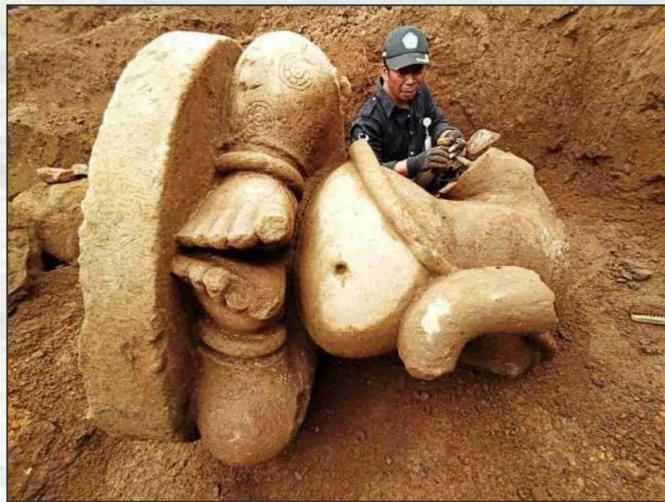


'गणेश' नाम सुनते ही हमारे मस्तिष्क में छवि आती है एक विशालकाय मानव शरीर की, जिसका मुख है 'हाथी' का। माना जाता है कि इन गणेश जी का जन्म माता पार्वती (जो कि शिव जी की पत्नी थीं) के द्वारा मैल (या उबटन) से हुआ है। बहुत से लोगों के मन में ये जिज्ञासा होती है कि ऐसा अप्राकृतिक या कहें सृष्टि क्रमविरुद्ध जन्म कैसे हो सकता है व एक मनुष्य के शरीर पर हाथी का सिर कैसे लग सकता है? बहुत से लोग इन सब कारणों से गणेश, शिव आदि पात्रों को काल्पनिक समझते हैं साथ ही उन ग्रन्थों को भी काल्पनिक कथाओं वाला ही समझते हैं जिनमें इनका वर्णन आता है। तो 'क्या गणेश के बारे में जितना कुछ हमने सुना है वह सब सत्य है? क्या गणेश कथा व प्रतिमा का कुछ और भी अर्थ है जिसे हमने भुला दिया है?' ऐसे प्रश्नों के उत्तर इस छोटे से लेख के माध्यम से देने का प्रयास किया जायेगा।

विद्वानों के मतानुसार गाणपत्य संप्रदाय का प्रचलन पांचवीं सदी के बीच में हुआ था। केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व भर में इसका प्रचार हुआ। चीन में सन् ५३१ में बनी गणेश प्रतिमा, अफगानिस्तान की छठी शताब्दी की गणेश प्रतिमा इस बात का प्रमाण देती है। ईरान, स्यांमार, श्रीलंका, नेपाल, थाईलैंड, लाओस, कंबोडिया, वियतनाम, मंगोलिया, जापान, इंडोनेशिया, ब्रुनेई, बुल्गारिया, मेकिसिको और अन्य लैटिन अमेरिकी देशों में भी ऐसी प्रतिमाएं मिल चुकी हैं।



मध्य प्रदेश के विदिशा जिले में स्थित गुप्तकालीन उदयगिरी की एक गुफा में स्थित यह बालरूप गणेश की प्रतिमा उस समय की मानी जाती है जब गणेश प्रतिमाओं का निर्माण प्रारम्भ ही हुआ था।



हाल ही में मध्य जावा में The Central Java Institute for Preservation of Cultural Heritage द्वारा एक विशाल प्रतिमा भूमि से निकाली गई है।

आज भी कुछ सभ्यताओं में इनको विशेष स्थान प्राप्त है। कुछ देशों में गणेश जी की पूजा अलग-अलग नामों से की जाती है। इन्हें जापान में कांगितेन और थाईलैंड में फिकानेत कहा जाता है वहीं श्रीलंका में ये पिल्लयार कहलाते हैं।



जापान में कांगितेन की प्रतिमा



लाओस द्वारा सन् 1971 में जारी किया गया डाक टिकट जिस पर ऐसी ही गणेश प्रतिमा अंकित है।



थाईलैंड द्वारा सन् 2014 में जारी किये गये इस डाक टिकट पर भी ऐसी ही गणेश प्रतिमा अंकित है।



केवल इन प्रतिमाओं से सभी प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल सकते। 'श्री गणेश' को समझने के लिये हमें अपने ग्रन्थों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

आधुनिक समय में गणेश जी के बारे में जो भी किस्से कहानियां प्रचलित हैं वह सब आधुनिक पुराणों* की देन हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण, शिव पुराण, मत्स्य पुराण, स्कन्द पुराण आदि पुराणों में गणेश की नाना प्रकार की कथाएं व स्तुति हैं। हालांकि अलग अलग पुराणों में अलग अलग बातें मिलती हैं। उदाहरणार्थ...

शिव पुराण के अनुसार पार्वती जी ने मैल से गणेश उत्पन्न किये। गणेश ने पार्वती जी के स्नान करते समय शिवजी को घर के अंदर नहीं आने दिया। दोनों के बीच ब्रह्म सहस्र वर्षों तक युद्ध हुआ! अन्त में क्रोध में आकर शिव जी ने धोके से (युद्ध में व्यस्त गणेश के पीछे से) गणेश का सिर काट दिया। पार्वती के विलाप करने पर शिव ने हाथी का सिर गणेश के सिर के स्थान पर लगा दिया और पुनर्जीवित कर दिया।

मत्स्य पुराण के अनुसार पार्वती ने अपने शरीर के मैल से एक मूर्ति बनाई और उस मूर्ति में प्राण भर कर उसे जीवित कर दिया। वह जीवित पुत्र बड़े पेट वाला और हाथी के सिर का था।

*पुराण प्रक्षेपित होने के कारण शत प्रतिशत सत्य नहीं हैं।



ब्रह्मवैर्त पुराण कहता है कि पार्वती जी को कोई पुत्र नहीं था। पार्वती ने पुत्र प्राप्ति के लिए विष्णु जी की भक्ति करी, तत्पश्चात उनको एक पुत्र प्राप्त हुआ। उस नवजात पुत्र को देखने के लिए जब देवतागण आए तो उनमें से एक शनि देव भी थे जिनकी दृष्टि से उस बालक का सिर स्वतः कट गया। तब विष्णु ने पुष्पक भद्र नदी के तट पर सोते हुए एक हाथी का सिर काट कर उस शिशु की गर्दन में लगा दिया।

वराह पुराण की कथा के अनुसार शिव जी के मुख के तेज से गणेश पैदा हुआ। वह बालक बड़ा सुंदर और तेजस्वी था। पार्वती ने गणेश को शाप देकर बदसूरत बना दिया।

गणेश पुराण की कथा तो और भिन्न है। इस पुराण के अनुसार गणपति अदिति के बेटे थे। अदिति की प्रार्थना सुनकर स्वयं महागणपति ने उनके गर्भ से जन्म लिया था।

स्कंद पुराण की कथा बिल्कुल भिन्न है। इसके अनुसार वरेण्य नामक एक राजा व उसकी रानी को विघ्नेश्वर नामक पुत्र हुआ। उसके चार भुजाएं और हाथों में आयुध थे। राजा ने सेवकों से उस बच्चे को दूर किसी सरोवर में फेंक देने के लिए कहा, वहां से पाश्व मुनि ने उस बच्चे को देखा और अपने आश्रम में ले आये और उसका पालन पोषण किया।



तो शिव, पार्वती तथा उनके पुत्र गणपति की ऐसी कहानियां हमारे पुराणों में लिखित हैं। लेकिन सत्य तो केवल एक होता है, अनेक नहीं! आज विज्ञान के युग में कुछ वर्ष पहले लिखे (या प्रक्षिप्त किये गये) पुराणों की कौन सी कथा माननी है वा कौन सी नहीं इसका निर्णय तर्क-अनुसंधान आदि के द्वारा विवेकपूर्ण विचारकर ही किया जा सकता है। इस पर भी चिंतन करने की आवश्यकता है कि ये उपरोक्त कथाएं कहाँ तक सत्य हैं, कितना ईश्वर व सृष्टि के नियमों का भली भाँति पालन करती हैं।

पुराणों में ही इतना मतभेद है तो यह प्रश्न स्वाभाविक भी है कि किस पुराण की कथा को सही माना जाए और यदि सही किसी को मान भी लिया जाए तो इससे शेष पुराण झूठ सिद्ध होंगे। किसी की कथा को सही माना भी जाये तो उसके पीछे क्या कारण माना जाए क्योंकि सभी पुराणों की कथाएं ईश्वर और प्रकृति के नियम के अनुरूप नहीं लगतीं, तर्क से भी उचित नहीं लगतीं। साथ ही इनमें बहुत से स्वाभाविक प्रश्न भी उठते हैं।* अतः इनको शत-प्रतिशत सही तो नहीं कहा जा सकता है। लेकिन सच्चाई जानना आवश्यक है।

* जैसे कि मैल से किसी का जीवित मुनष्य बनना कैसे संभव है? क्या पार्वती जी पहले नहाती थीं? सिर कटने के बाद माता ने पुनः प्राण पूर्ववत् क्यों नहीं डाले? ऐसे अनेकों प्रश्न हैं। साथ ही ये कथाएं भगवान शिव के चरित्र के साथ भी उचित नहीं लगतीं।



चूंकि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है, भाषा सहित सभी सत्य ज्ञान-विज्ञान का मूल है। अतः इससे बड़ा प्रमाण कोई नहीं है इसलिए वेद 'गणेश/गणपति' शब्द पर क्या कहता है, यह जानना आवश्यक है। वेद में गणेश ईश्वर का ही विशेषण नाम है। गणेश, शिव, इंद्र, वरुण, अग्नि, विष्णु, ब्रह्मा, रुद्र आदि नाम एक ही ईश्वर की विशेषता बताते हैं (देखें यजुर्वेद २.३२.१*, ऋग्वेद १.१६४.४६*)।

वेद में गणपति जी का वर्णन इस प्रकार मिलता है-

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविम् कवीनामुपमश्रवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृणवन्नूतिभिः सीद सादनम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१)

इस मंत्र में गणपति ही नहीं बल्कि परमात्मा के अन्य गौण व अलंकारिक नामों जैसे कि ब्रह्मणस्पति, कवि, ज्येष्ठराज, उपम, श्रवणस्तमम् का वर्णन है। यह मुख्य रूप से एक आध्यात्मिक मंत्र है। इसका अर्थ है- "हे गणों (गणनीय वस्तुओं/समुहों) के स्वामी गणपति (परमेश्वर) आप कवियों के कवि हैं (क्योंकि वेद ईश्वर का ही अजर-अमर काव्य है), उपमा देने योग्य हैं, श्रवण करने योग्य हैं (क्योंकि...

* तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः। तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः॥

* इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्। एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥



वेद ईश्वर की वाणी है)। आप सबसे श्रेष्ठ राजा हैं (क्योंकि ईश्वर समस्त ब्रह्मांड का एकमेव नित्य शासक है)। आप ही गुरुओं के गुरु हैं। आप हमारी प्रार्थना को सुनते हुए हमारे रक्षण हेतु हमारे हृदय में विराजें।"

ऐतरेय ब्राह्मण से भी इस बात की पुष्टि होती है कि गणपति, बृहस्पति, ब्रह्मणस्पति आदि विशेषण सृष्टि कर्ता परमात्मा के लिए ही प्रयुक्त हुए हैं-
गणानां त्वा गणपतिं हवामहे इति ब्रह्मणस्पत्यं ब्रह्म वै बृहस्पति ब्रह्मणैवैनं तद् भिषज्यति तथा यस्य स प्रथश्च॥

अर्थात्, परमात्मा जिसका वेदों में गणपति, बृहस्पति, ब्रह्मणस्पति इत्यादि विशेषणों के द्वारा वर्णन किया गया है, वह आकाशादि सब पदार्थों में सर्वत्र व्याप्त है। जैसे एक कुशल वैद्य औषधियों के द्वारा रोगी को रोग से मुक्त करता है, वैसे ही वेदों के स्वामी, जगदीश्वर वेद ज्ञान रूपी दिव्य औषधि द्वारा अज्ञान, अविद्या रूपी रोग से मुनष्यों को मुक्त करता है।

स्वामी दयानंद सरस्वती जी **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रथम समुल्लास में लिखते हैं कि-
 " 'गण संख्याने' इस धातु से 'गण' सिद्ध होता है, इसके आगे 'ईशा' वा 'पति' शब्द...



रखने से 'गणेश' और 'गणपति' शब्द सिद्ध होते हैं। 'ये प्रकृत्यादयो जडा जीवाश्च गण्यन्ते संख्यायन्ते तेषामीशः स्वामी पतिः पालको वा' जो प्रकृत्यादि जड़ और सब जीव प्रख्यात पदार्थों का स्वामी व पालन करनेहारा है, इससे ईश्वर का नाम 'गणेश' वा 'गणपति' है।"

इन सबसे ये सिद्ध होता है कि गणपति व गणेश भी परमेश्वर का ही नाम है। इस विषय से संबन्धित अन्य कुछ प्रश्न व उनके उत्तर-

प्र. आजकल जिस गणेश प्रतिमा को लोग पूजते हैं, क्या वह परमेश्वर नहीं है?
उत्तर नहीं है!

प्र. ऐसा कैसे कह सकते हैं?

उत्तर ईश्वर की कोई प्रतिमा, प्रतिकृति, परिमाणादि नहीं है (यजुर्वेद ३२.३*)। ईश्वर का कोई शरीर नहीं है, वह अव्रण है (घाव आदि से रहित), नस-नाड़ियों के बन्धन से रहित है व सर्वव्यापक है (यजुर्वेद ४०.८*)। वह आंखों से भी नहीं...

* न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः। हिरण्यगर्भऽइत्येष मा माहिंसीदित्येषा यस्मान् जातऽइत्येषः॥

❖ स पर्यागाच्छुक्रमकायमव्रणमस्त्राविरं शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिमृः..... व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥



दिखता (श्वेताश्वतरोपनिषद् ४.२०*)। ईश्वर जन्म आदि दोषों से भी रहित है अर्थात् नित्य है। जिन गणेश को लोग पूजते हैं, उनमें ये सब गुण नहीं हैं। ये गणेश नित्य नहीं हैं, अव्रण नहीं हैं, शरीरधारी हैं, सर्वव्यापक ना होकर एकदेशीय हैं। इनका जन्म हुआ है, जबकि ईश्वर का कोई जन्म नहीं होता, वह आनादि अनन्त है। इन सब प्रमाणों से सिद्ध है कि ये गणेश परमेश्वर नहीं हैं। वेद में भी जिस गणपति का नाम आया है वह परमेश्वर के लिये आया है।

प्र. वेद को प्रमाण क्यों मानें?

उत्तर क्योंकि वेद वह ज्ञान है जो अपौरुष्य है। वेद ही सनातन संस्कृति का आधार है व सभी सत्य ज्ञान विज्ञान का मूल वेद में निहित है। श्री मनु ने भी “प्रमाणं परमं श्रुतिः” कहकर वेद को ही परम प्रमाण माना है जिनका अनुसरण श्री राम आदि सभी महापुरुषों ने किया है। किसी भी ग्रंथ में यदि मतभेद मिलते हैं तो सदैव वेद के अनुकूल बात ही सही मानी जाती है। आचार्य चाणक्य जी ने भी चाणक्यनीति(५.१०)* में वेद को ना मानने वाले को व्यर्थ व उपेक्षणीय माना है। अतः वेद व उसके व्याख्याता/वेदांग आदि के प्रमाण सर्वप्रथम मानने योग्य हैं।

* न संदर्शे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम्। हृदा हृदिस्थं मनसा य एन-मेवं विदुरमृतास्ते भवन्ति॥

▲ अन्यथा वेदापाण्डित्यं शास्त्रमाचारमन्यथा। अन्यथावादनाभान्तलोका क्लिश्यन्ति चान्यथा॥



यह अब स्पष्ट है कि वेद में निराकार सर्वव्यापी ईश्वर को गणेश कहा गया है। यह वह गणेश नहीं हैं जिनकी प्रतिमा बनाकर जनसामान्य द्वारा पूजा जाता है। परन्तु ऐतिहासिक पुरुष गणेश के बारे में जानना शेष है, जिनको शिव-पार्वती का पुत्र माना जाता है।

वेद मंत्रों के शब्दों को लेकर नाम रखने की परम्परा सृष्टि के प्रारम्भ से चली आ रही है। पर्वत-नदी, व्यवस्थाओं, मनुष्यों आदि के नाम वेदों से ही लिये जाते रहे हैं। यही बात **मनुस्मृति**(१.२१*) में भी लिखित है। अतः अब तक अनेकों 'गणेश', 'गणपति', 'शिव' आदि नाम के भी लोग हुए हैं। लेकिन एक शिव मुख्य हैं जिनको लोग पूजते हैं व गणेश जी का पिता मानते हैं। महाभारत युद्ध के पश्चात् धर्म का लोप हो जाने और विधर्मिओं द्वारा बहुत से ग्रन्थों को नष्ट कर देने से हमारे इतिहास का बहुत बड़ा हिस्सा आज उपलब्ध नहीं है अतः लाखों वर्ष पुरानी बहुत सी घटनाएं मौखिक रूप में रहने से शुद्ध नहीं रह पायीं। तथापि आज उपलब्ध मुख्य ऐतिहासिक ग्रन्थों (रामायण व महाभारत) में शिव व गणेश का नाम आता है। शिव जो की योगी महापुरुष थे एवं कैलाश व आस-पास के क्षेत्र में निवास करते थे...

* सर्वेषां तु स नामानि कर्मणि च पृथक् पृथक्। वेद शब्देभ्य एवाऽस्तदौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे॥

(अनुसंधानकर्ता प्रो. डॉ. सुरेन्द्रकुमार जी द्वारा सम्पादित मनुस्मृति 'विशुद्ध मनुस्मृति' में १.१३)



कैलाश-मानसरोवर से लेकर भूटान आदि तक उनका शासन भी बताया जाता है। महाभारत के भी कुछ प्रसंग ऐसे हैं जो इन्हें स्पष्टतः ऐतिहासिक पुरुष सिद्ध करते हैं। अर्जुन पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए हिमालय पर जाते हैं। यह अस्त्र शिव से ही प्राप्त होना था। शिव उनकी परीक्षा लेकर ही अस्त्र उन्हें प्रदान करते हैं। एक और प्रसंग में शंकर का युद्ध कृष्ण से होता है।*

एक शिव का वर्णन **रामायण** (बालकाण्ड, सर्ग- २३) में तपस्वी के रूप में मिलता है। जिनका आश्रम सरयू नदी के तट पर बना हुआ था।

कुछ विद्वानों का मत है कि शिव नाम के कई महापुरुष हमारे देश में हुए हैं जिनकी बातों को आज सम्मिश्रित करके एक ही महापुरुष बना दिया गया है, और सही भी यही लगता है। हालांकि यह एक अलग और विस्तृत विषय है, इसलिये यहाँ इस पर अधिक बात आवश्यक नहीं होगी।

ऐसे ही एक शिव व पार्वती जी के पुत्रं का नाम **महाभारत** के आदि पर्व^ में आता है।

श्री गणेश को अत्यन्त विद्वान माना जाता है। उनके पिता बड़े योगी और विद्वान....

* स्रोतः- "शिव कौन हैं" पृष्ठ- ४, ५ ♦ ऐसा सामान्यतः लोग मानते हैं।

^ सर्वज्ञोऽपि गणेशो यत्क्षणमास्ते विचारयन्। तावच्चकार व्यासोऽपि श्वोकानन्यान बहूनपि॥



थे, माता पार्वती भी बड़ी विदुषी योगिनी थीं। तो ऐसे माता-पिता की सन्तान का योगी और विद्वान होना भी स्वाभाविक ही है। ऐसा भी माना जाता है कि श्री गणेश मालती नामक नदी के तट पर रहते थे। गणेश जी के एक बड़े भाई भी माने जाते हैं जिनका नाम कुमार कार्तिकेय था, वे भी एक महान योद्धा कहे गये हैं। जनश्रुतिओं से ज्ञात होता है कि दक्षिण भारतीय/एशिया उनका मुख्य प्रभाव क्षेत्र रहा। महाभारत (वनपर्व) में भी कुमार (स्कन्द) की कथा मिलती है।

ज्येष्ठ वर्मन जी अपनी पुस्तक 'श्रीगणेश का रहस्य' में लिखते हैं कि "संभव है कि इसके पूर्व भी इसी नाम के अन्य महापुरुष भी हुए हों लेकिन इनका क्रमबद्ध इतिहास अब उपलब्ध नहीं है। अज्ञानवशात् सभी गणेश एक ही माने गए और विभिन्न गणपतिओं से संबंधित बातों को इकट्ठा करके एक खिचड़ी गणपति की कल्पना की गई है। इसलिए पुराणों में तथा स्तोत्रग्रंथों में जिस गणपति की चर्चा है वह कौन सा गणपति है, यह समझना कठिन हो गया है।"

उपरोक्त सभी तथ्यों से स्पष्ट होता है कि श्री गणेश को काल्पनिक नहीं कहा जा सकता। पौराणिक कथाओं में गणेश जी का जो वर्णन हुआ है वह तर्कसंगत नहीं है और ना ही शत प्रतिशत सत्य लेकिन सम्भवतः गणेश नाम के ऐतिहासिक महापुरुष वास्तव में आर्यावर्त में हुए हैं।



अब तक हमने जाना है कि परमपिता परमेश्वर ही वास्तविक गणेश/गणपति हैं क्योंकि वही सभी प्रकार के गणों के स्वामी हैं। इसके अतिरिक्त गणेश/गणपति नाम के महापुरुष भी आर्यवर्त में हुए हैं (हालांकि उनका सिर किसी हाथी का नहीं था जैसा कि जनसामान्य में प्रचलित है)। इसके अतिरिक्त गणेश नाम राजा/राष्ट्रपति एवं यज्ञ/प्रजापति/यज्ञाग्नि का भी है। क्योंकि गण का अर्थ प्रजा भी होता है, इसलिए प्रजातंत्र में प्रजा के सर्वोच्च अधिकारी को प्रजापति या राष्ट्रपति भी कहते हैं, अतः वह भी गणपति कहलाते हैं। अब बात करेंगे गणेश के यज्ञ/यज्ञाग्नि होने की! यज्ञ भी प्रजापति है क्योंकि उससे प्रजा का उपकार होता है।

- श्री गणेश का रंग लाल बताया जाता है (देखें गणेश पुराण १.२०*) जो कि अग्नि का भी रंग है। पहले गणेश-प्रतिमा भी मिट्टी या गोबर की बनाई जाती थीं, और उन पर नारंगी या लाल रंग रंगा जाता था, क्योंकि यह अग्नि का प्रतीक है।
- गणेश को धूमकेतु, धूम्रवर्ण व धूम्रध्वज कहा गया है (उदाहरणार्थ देखें गणेश पुराण १.२१^) अग्नि भी धूमकेतु आदि कहलाती है (उदाहरणार्थ देखें....)

* द्वापरे रक्तवर्णोऽसावाखरुदश्तुर्भुजः। गजानन इति ख्यातः पूजितः सुरमानवैः कलौ (स्रोत- श्रीगणेश का रहस्य)

^ तु धूम्रवर्णोऽसावश्वारुढो द्विहस्तवान्। धूमकेतुरिति ख्यातो म्लेच्छानीक विनाशकृत्॥ (स्रोत- श्रीगणेश का रहस्य)



ऋग्वेद १.४४.३*)।



(गजानन व यज्ञा-अग्नि में समानता दिखाता हुआ एक चित्र)

- गणेश को वक्रतुंड यानी वक्र (गोलाई लिये या टेढ़ा) मुख वाला कहते हैं अग्नि का मुख (ज्वाला) भी टेढ़ा है।
- गणपति को लंबोदर कहते हैं। अग्नि भी लंबोदर कहलाती है क्योंकि अग्नि को कितना भी खिलाओ उसको अजीर्ण नहीं होता।

.....
* अद्या दूतं वृणीमहे वसुं अग्निं पुरुप्रियम्। धूमकेतुं भाक्षजीकं व्युष्टिषु यज्ञानामध्वरश्रियम्॥



- कहीं-कहीं गणेश के पञ्चमुखी होने का भी वर्णन आता है। भारत के कई स्थानों पर पञ्चमुखी गणेश प्रतिमा विराजित है। गणेश का पञ्चमुखी होना पांच प्रकार के यज्ञ दर्शाता है। ये पञ्चमहायज्ञ निम्नलिखित हैं-

• ब्रह्मयज्ञ

(वेदादि ग्रंथों का अध्ययन-अध्यापन, ईश्वर उपासना, योगाभ्यास आदि)

• पितृयज्ञ

(अपने माता-पिता, गुरुजन आदि की श्रद्धाभाव से सेवा, आङ्गा पालन, तर्पण आदि)

• देवयज्ञ

(देवताओं का पूजन*, सत्संग तथा अग्निहोत्र आदि)

• अतिथियज्ञ

(अतिथि की सेवा करना, अन्न-जल आदि देना)

• बलिवैश्वदेव यज्ञ

(जीव-जन्तुओं, पेड़-पौधों, पक्षियों, कीड़ों, गरीब, रोगी आदि के कल्याण के लिए अपने भाग से अन्न-जल आदि देना)



खंडवा (म०प्र०) के एक मन्दिर में स्थापित पंचमुखी गणेश प्रतिमा

* दान देने वाले, प्रकाशित होने/करने वाले, विद्वानों आदि को देव कहते हैं। ये जड़ (उदाहरण- सूर्य, समुद्र आदि) व चेतन (उदाहरण- माता-पिता, गुरु आदि) दोनों प्रकार के हो सकते हैं। देवताओं का सत्कार करना ही पूजन कहलाता है।



इस भाग में हम ऐतिहासिक महापुरुष गणेश के नहीं बल्कि दूसरे गणेश (प्रजापति/यज्ञाग्नि) के परिवार का विश्लेषण करेंगे एवं जानेंगे कि जनश्रुतियों में कथा बन चुके कुछ पात्रों के पीछे वास्तव में कौन से आध्यात्मिक अर्थ हैं।^५

■ गणेश के पिता महादेव-

भगवान शिव को लोग महादेव, रुद्र, महायम इत्यादि नामों से भी जानते हैं। यह सारे विशेषण वेदों में सूर्य के लिए भी प्रयुक्त हुए हैं (देखें ऋग्वेद १०.३७.१*, अथर्ववेद १३.४.५*)। अतः सूर्य/अग्नि के पुत्र को यज्ञ/प्रजापति/गणपति कहा जाये तो उसमें कोई दोष भी नहीं है।

■ गणेश की माता पार्वती-

शिव (सूर्य) के जितने विशेषण हैं, उनसे मिलकर उनकी शक्तिओं के भी...

^५ कोई संशय ना हो, इसलिये यह जानना आवश्यक है कि वेद में एक ही मंत्र के या कहें उनमें प्रयुक्त शब्दों के आधिदैविक, आधिभौतिक व आध्यात्मिक अर्थ होते हैं। शिव, अश्व, अग्नि, देव आदि अनेकों शब्द हैं जिनके उपरोक्त तीन प्रकार से अर्थ होते हैं। किस शब्द का कौन सा अर्थ प्रयोग करना है यह उस विषय/परिपेक्ष्य के अनुरूप होता है जिसमें मंत्र का अनुवाद किया जाता है।

* नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवाय तदतं सपर्यता। द्वैदेशो देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत॥

◊ सोऽग्निः स उ सूर्यः स उ एव महायमः। रथमिर्मिर्भ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः॥



विशेषण बनते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

काल	काली
महाकाल	महाकाली
महादेव	महादेवी
शिव	शिवानी
शंभु	शांभवी
भव	भवानी

पार्वती, महादेवी, काली आदि नाम गणेश की माता को दर्शाते हैं। गणेश की माता का नाम गौरी भी है। ज्येष्ठ वर्मन जी ने विचार रखा है कि यह शब्द वर्ण को निरूपित करता है। यह गौरी आकाश में मेघों की गोद में चमकती हुई बिजली है। यह पर्वत अर्थात् मेघों से उत्पन्न होती है इसलिए इसका नाम पार्वती* है। बिजली के पुत्र को भी अलंकारिक शब्दों में यज्ञ/प्रजापति/गणपति कहने में

* सम्भवतः पर्वतों से मेघों (बादलों) का परोक्ष सम्बन्ध है। इस विषय को समझने के लिये हरिशंकर दीक्षित जी द्वारा लिखी पुस्तक 'त्योहारपद्धति' से यह बात यथारूप उद्घाटत कर देता हूँ। इसके पृष्ठ संख्या ८८ पर लिखित है- "संस्कृत में नग शब्द से पर्वत तथा....



भी कोई दोष नहीं दिखता।

■ गणेश के भाई कार्तिकेय-

गणेश के भाई कार्तिकेय माने जाते हैं। इनको कुमार, स्कन्द आदि भी कहा जाता है। चित्रों में इनको छः मुख वाला दिखाया जाता है। इनका रहस्य इस प्रकार है कि कृतिका नक्षत्र में होने वाले एक विशेष यज्ञ की अग्नि को आहवनीय अग्नि कहते हैं। इस कृतिका नक्षत्र में छः मुख्य तारे होते हैं, इसलिए कार्तिकेय को षण्मुख/छः मुख वाला भी कहते हैं (स्कन्द की माता होने के कारण ही पार्वती स्कन्दमाता कहलाती हैं)। 'स्कदि गति शोषणयोः' इस धातु से स्कन्द शब्द बनता है, गति और शोषण अग्नि के ही गुण हैं इसलिए स्कंद शब्द का अर्थ अग्नि है। गणेश जी प्रजापति/यज्ञ हैं तो उनके...

.....

वृक्षादि का ग्रहण इसलिए है कि (न गच्छति इति नगः) जो चले नहीं, एक स्थान पर स्थिर रहें इससे पर्वत और वृक्षों का नग संज्ञा है। इस नग शब्द से जो कि पर्वत का वाचक है इन तीनों (मेघ, सर्प, हस्ती) की नग संज्ञा बनी है। यदि यहां यह प्रश्न हो कि पर्वत से इनके नामों का ग्रहण किस प्रकार हुआ तब यह कहना संतोषजनक होगा कि संस्कृत में तद्वित से ऐसे प्रत्यय होते हैं जिनसे द्रव्यों तथा व्यक्तियों की उत्पत्ति, निवास तथा प्राप्ति आदि का ग्रहण होता है एवं इन शब्दों से भी पाया जाता है। हस्ती का निवास स्थान तथा उत्पत्ति पर्वतों से ही होती है। मेघ (बादल) भी बहुदा पर्वतों में बहुताय से होते हैं। जिन महापुरुषों ने पर्वतों में प्रमण करा है उनके मुख से सुना होगा कि पर्वतों में मेघ नित्य बनते रहते हैं, पर्वतों से ऊपर को उठते, वर्षते दृष्टिगोचर होते हैं।" तो जिस प्रकार नग (पर्वत) से नाग (मेघ आदि) शब्द निरूपित होता है, सम्भवतः इसी प्रकार पर्वत से पार्वती (मेघ/बिजली आदि) शब्द सम्बन्धित है।



भाई भी यज्ञ की अग्नि सिद्ध होते हैं। ये दोनों ही अग्नि/सूर्य (शिव) के पुत्र हैं, जो कि स्वभाविक है।

■ गणेश की पलियाँ-

गणेश जी की दो पली रिद्धि और सिद्धि मानी जाती हैं। यदि वास्तविक ऐतिहासिक गणेश के दो पली होने की सोचें तो यह उचित नहीं दिखता। क्योंकि वेदादि शास्त्रों में एक पली का ही उल्लेख है। वेद में कोई ऐसा प्रमाण नहीं मिलता जो बहुविवाह की ओर संकेत करता हो। शिव-राम-कृष्ण* आदि महापुरुष जो वेद-आङ्गा पर चलते थे, सभी ने एक ही विवाह किया था। इतिहास साक्षी है कि एक से अधिक पली का होना जीवन में दुःखों को आमंत्रित करता है। अतः योगी भगवान शिव के पुत्र की दो पली होना वास्तविक ना होकर अलंकारिक ही लगता है।

साधरणतः ज्ञान को या किसी ज्ञान, तकनीकादि के सिद्ध करने को कहते हैं सिद्धि व समृद्धि को कहते हैं रिद्धि। यज्ञ से सुख समृद्धि मानी भी गई है। अतः यही अलंकारिक भाषा में गणेश/गणपति/यज्ञ की पली कही गई है।

* पुराण की कथाओं के द्वारा समाज में ऐसा मिथ्या प्रचार है कि श्रीकृष्ण जी की सोलह हजार रानियाँ थीं, वास्तव में यह सत्य नहीं है।



■ गणेश की संतानें-

गणेश की पुत्री संतोषी माता बताई जाती हैं, तो कुछ लोग उनके दो पुत्र (शुभ और लाभ) मानते हैं। यह भी अलंकारिक प्रतीत होता है। जब रिद्धि व सिद्धि का अर्थ समझ में आ ही गया है तो उनकी पुत्री/पुत्र का रहस्य समझने में देर नहीं लगेगी। जिसके पास रिद्धि (समृद्धि) एवं सिद्धि (ज्ञान) दोनों हैं वह संतोष प्राप्त करता है, यहीं से गणेश जी की पुत्री संतोषी सिद्ध होती है। शुभ-लाभ का अर्थ भी इसी प्रकार से स्पष्ट हो जाता है। यहीं गणेश जी की संतानों का रहस्य है।





अब हम समाज में प्रचलित गणेश प्रतिमा/स्वरूप पर विचार करेंगे, वही प्रतिमा जिसके वास्तविक भाव को ना समझकर लोग उसे गणेश का वास्तविक स्वरूप जान, पूजते हैं।

अब तक हम यह तो जान चुके हैं कि 'गणपति' शब्द किन-किन अर्थों में प्रयुक्त होता है। ऐतिहासिक महापुरुष श्री गणेश का मुख मनुष्य सदृश ही था, परन्तु अब आधुनिक गणेश प्रतिमा/स्वरूप (जिसका मुख हाथी का है) पर विचार करेंगे। आधुनिक विख्यात वास्तविक गणेश से कुछ भिन्न गणेश प्रतिमा यज्ञ के महत्व, ईश्वरीय व प्रजापालक (राजा, राष्ट्राध्यक्ष) आदि के गुणों को दर्शाती है। कई संतों, शोधकर्ताओं ने ऐसी गणेश प्रतिमा को बनाने के पीछे छिपे अर्थ बताये हैं। मदन रहेजा जी पुस्तक 'वैदिक गणपति' में लिखते हैं कि "वास्तव में एक विद्वान कलाकार ने गणपति की मूर्ति में सर्वव्यापक परमात्मा तथा देश के राष्ट्रपति के गुण, कर्म, स्वभाव और प्रजापति अर्थात् यज्ञाग्नि को दर्शाने का प्रयास किया है जो सराहनीय है।... गणपति की प्रतिमा को बड़ी सूझबूझ के साथ बनाया गया है मूर्ति को प्रतीक मानने में कोई आपत्ति नहीं है परंतु मूर्ति को चेतन भगवान मानकर पूजा और आरती करना मात्र अधर्म है, परमात्मा का निरादर करना है।" (पृष्ठ- ४६, ४७)



विद्वानजनों ने गणेश प्रतिमा के जो जो अर्थ बताये हैं वे सभी इस प्रकार हैं-

एक दन्त



"नास्य छिद्रं परो विद्याच्छिद्रं विद्यात्परस्य तु।"

यह मनुस्मृति (७.१०५) का कथन है। इसका अर्थ है राजा के भेद को शत्रु ना जान पाएं किंतु शत्रुओं के भेद को राजा अवश्य जान लें।

हाथी के दो प्रकार के दांत होते हैं एक चबाने के लिए, दूसरे बाहर दिखने वाले। यह कूटनीति का प्रतीक है इसलिए हिंदी में एक कहावत भी बोली जाती है "हाथी के दांत खाने के कुछ और, दिखाने के कुछ और"। यही सन्देश मूर्ति के द्वारा प्रजापति (राष्ट्राध्यक्ष) को दिया गया है। एकदंत सदैव एक पथ पर डटे रहने का भी प्रतीक है जो दर्शाता है कि राजा को सदैव एक जैसा ही बोलना चाहिए। मत-मतांतरों में बंटना भी उचित नहीं। वेद में भी कहा गया है "सं गच्छध्वम्, सं वदध्वम्" अर्थात् सभी साथ चलें, मिलकर बोलें।



बड़े कान

बड़े बड़े कान दर्शाते हैं कि प्रजापति (राजा) को सभी की बातें बिना भेद-भाव के सुननी चाहिए। साथ ही शत्रु की गुप्तबातें भी सदैव जाननी चाहिए। 'ज्ञानेश्वरी' में इन्हें मीमांसा (पूर्व व उत्तर) का प्रतीक माना है।



टूटा हुआ दन्त

यह निःरता का प्रतीक है। ज्ञानेश्वरी में इसे व्याख्यानादि से खण्डित हुए बोद्धमत का प्रतीक कहा है।

लम्बी सूँड

यह मान-सम्मान आदि की प्रतीक है। साथ ही राष्ट्र व राष्ट्राध्यक्ष की दूर-दूर तक होने वाली कीर्ति को भी दर्शाती है। साथ ही यह अग्नि के गुणों को भी दर्शाती है।

लम्बोदर

यह प्रकृति के अनन्त भण्डार का प्रतीक है। राजा को भी बताता है कि राष्ट्र में सदैव अन्न-वस्त्र आदि के भण्डार बने रहें।



हाथ

मूर्ति में हाथों में पाश, अंकुश, गदा आदि विधान, नियम, अधिकार आदि के प्रतीक होते हैं। ये न्यायाधीश/राजा की शक्ति को दर्शाते हैं।

मोदक

मिष्ठान खुशहाली का प्रतीक है। साथ ही यह प्रतीक है कि राष्ट्र में सदैव समृद्धि, खुशहाली बनी रहे।

Sanatan Research Organization

चार भुजाएँ

चार हाथ चारों दिशाओं में व्याप्त राष्ट्र की कीर्ति का प्रतीक हैं। प्रजापति यज्ञ/यज्ञाग्नि के परिप्रेक्ष्य में यह हवन कुण्ड के चार कोने भी दर्शाता है।



मूषक

गणेश का यह मूषक भी कई बातें बताता है। मूषक को 'आखु' भी कहा गया है, इसका अर्थ होता है खोदने वाला। यजुर्वेद(११.१९) में कहा गया है "आक्रम्या वाजिन्पृथिवीमग्निमिच्छ रुचा त्वम्" अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि भूगर्भ और अग्नि विद्या से पृथ्वी के पदार्थों को अच्छे प्रकार परीक्षा करके स्वर्ण आदि रत्नों को उत्साह के साथ प्राप्त करें और जो पृथ्वी को खोदने वाले लोग हैं, उनको इस विद्या का उपदेश करें। अतः गणेश का आखु (मूषक) इस प्रकार के खोदने वाले और संपत्ति की खोज करने वाले लोगों का प्रतीक है।

चूंकि मूषक हाथी के सामने एक बहुत छोटा प्राणी है। अतः मूर्ति में दोनों का होना यह संदेश देता है कि सभी एक समान हैं। राजा को बिना किसी भेद-भाव के सभी के कल्याण के लिये कार्य करना चाहिए।



Sanatan Research Organization

- तो गणेश प्रतिमा के ये अर्थ कुछ लेखकों/शोधकर्ताओं ने बताए हैं; हालांकि इस पर और शोध की आवश्यकता है।



हमने जाना कि गणपति गणेशादि नाम अर्थ सहित कितने विस्तृत हैं। गणेश परमेश्वर का भी नाम है और यज्ञाग्नि का भी, इसके अतिरिक्त राष्ट्राध्यक्ष को भी गणपति कहा जाता है। गणपति नाम के महापुरुष भी हमारे देश में हुए हैं। महाभारत काल में मुख्यतः ये उस समय के एक प्रसिद्ध लिपिक थे (देखें आदिपर्व, अध्याय-१)। सम्भव है कि इसके अतिरिक्त और भी भगवान गणेश हुए हों जो ज्ञान, कर्म आदि के ऐश्वर्य से भगवान* कहलाये हों, हालांकि आज इनमें से किसी का कोई विस्तृत और शुद्ध इतिहास नहीं मिलता। मिलती हैं तो कुछ कहानियाँ जिनमें से कुछ बातें सत्य हैं तो कुछ अमान्य। 'गणेश' की आधुनिक मान्यता वास्तविकता से बिल्कुल भिन्न जान पड़ती है। आज गणेश को हाथी के सिर वाला कोई महापुरुष माना जाता है और समाज उनकी मूर्ति के आगे धूप-फल आदि को चढ़ा कर आरती या गीत आदि गाना ही अपनी जिम्मेदारी और धर्म का आचरण समझता है। इतना ही नहीं, अब तो गणेश विसर्जन (जो कि महाराष्ट्र के कुछ क्षेत्रों से आरम्भ हुआ था) जिसकी पहले के समय में अलग...

* समाज में 'भगवान' शब्द को लेकर गलत अवधारणा विद्यमान है। लोग ईश्वर और भगवान को एक ही समझते हैं लेकिन दोनों का अर्थ भिन्न है। भगवान एक तरह से उपाधि है, जो कि उन महापुरुषों को दी जाती है जिनके पास भग हो। वैभव, बल, कीर्ति, श्री, ज्ञान, वैराग्य को सम्मिलित रूप से भग कहते हैं। विष्णु पुराण (६.५.७४) भी यही कहता है—
ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसरिश्रयः। ज्ञानवैराग्ययोश्वैव षष्ठां भग इतीरणा ॥



भूमिका थी, आज ना केवल भारत में अपितु विश्वभर में रह रहे भारतीयों में भी लोकप्रिय है। कुछ वर्षों पहले जहाँ कुछ स्थानों पर गणेश चतुर्थी के पर्व का कोई विशेष महत्व नहीं होता था वहाँ भी आज धूम-धाम से सड़कों पर गणेश प्रतिमा की सवारी निकालते हुए नदी-नहरों में प्रतिमा को विसर्जित किया जाने लगा है। इन प्रतिमा, प्रथाओं का वास्तविक अर्थ ना समझकर, क्या वेदादि शास्त्रों का त्याग करके, दस धर्म नियमों* को त्याग कर, अपने धर्मपरायण कर्तव्यों को भूल कर ऐसे कार्य करना ही धर्मचिरण समझना सही है? क्या इस प्रकार प्रतिमाओं को चेतन मानकर उनके आगे झुकने, प्रतिमाओं की स्तुति-प्रार्थना करने से दुःख-दर्द दूर हुए? ईश्वर-आत्मा-प्रकृत्यादि विषयक ज्ञान बढ़ा? सभी का उत्तर है "बिल्कुल भी नहीं"! तो समस्या क्या है और कहाँ है? समस्या की जड़ है वेदादि शास्त्रों का त्याग कर देना, तर्क-अनुसंधान ना करते हुए अप्रमाणिक, वेदविरुद्ध, अतार्किक बातों को मानना और उनका अन्धानुसरण करना। जबकि बिना तर्क और अनुसंधान किये धर्म का वास्तविक तत्व नहीं जाना जा सकता और बिना धर्म के कैसा सुख और कैसी आध्यात्मिक उन्नति!?

* धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शुद्धि, इन्द्रिय-निग्रह, धी (शास्त्रज्ञान), विद्या, सत्य और अक्रोध; ये धर्म के दस लक्षण भगवान् मनु ने बताये हैं।- धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥



अतः हम सभी को चाहिए कि बिना किसी पूर्वाग्रह के धर्म, इतिहास आदि की वास्तविकताओं को जानें और धर्मानुसार आचरण करें। गणेश की प्रतिमा जो कि यज्ञादि उत्तम कर्म करने, वेद पाठन आदि करने का सन्देश देती है, उसको जानें। हमारे महापुरुषों ने जिस मार्ग पर अनुसरण किया है उस पर चलें, इसी से अपनी और अपने समाज, राष्ट्र की उन्नति सम्भव है अन्यथा इन सबको त्यागकर, ईश्वर के स्थान पर जड़ पदार्थों की स्तुति-उपासना आदि करने से ना तो किसी का भला हुआ है और ना ही भविष्य में होगा।

परम पिता परमेश्वर जो देवों के देव अर्थात् महादेव हैं, वही सभी गणनीय वस्तुओं के स्वामी होने से गणेश व गणपति कहलाते हैं। यह गणेश निराकार है, सर्वव्यापक है। हम जीवात्मा एकदेशीय होने से एक शरीर में ही हैं, जबकि ईश्वर सर्वव्यापक होने से सर्वत्र एक समान विद्यमान है इसलिये कहा जाता रहा है "ईशा वास्यमिदं सर्वं"। हमें चाहिए कि हम इस ईश्वर के बारे में जानने की रुचि रखें, उत्साहपूर्वक प्रयास करें, जानें, उपासना करें। स्वाध्याय, मानव धर्मचिरण, यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों को करें।

यह लेख समाज में लगभग लुप्त से हो चुके 'गणपति' के वास्तविक अर्थ और 'महत्व' को शास्त्रसम्मत पुनः आप तक कम शब्दों में पहुंचाने के लिये लिखा..



गया है। आपकी प्रतिक्रियाओं के आधार पर इस विषय पर एक पुस्तक लेखन विचारणीय होगा, जिसमें इस विषय से सम्बन्धित सभी बातों का विस्तारपूर्वक वर्णन शंका-समाधान के साथ दिया जाये। *

सहायक पुस्तकें

वैदिक गणपति

श्री गणेश का रहस्य

शिव रहस्य

शिव कौन हैं?

त्योहारपद्धति

सत्यार्थ प्रकाश

चाणक्य नीति

ज्ञानेश्वरी

मनुस्मृति

ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद

लेखक- मदन रहेजा

लेखक- ज्येष्ठ वर्मन

लेखक- ज्येष्ठ वर्मन

लेखक- स. कुमार

लेखक- हरिशंकर दीक्षित

लेखक- स्वामी दयानन्द सरस्वती

व्याख्याकार- आचार्य मानिक

अनुवादक- पं. रघुनाथ माधव भगाड़े

अनुवादक- पं. गिरिजाप्रसाद द्विवेदी

भाष्यकार- पं. हरिशरण सिद्धांतालंकार

व अन्य समाचार लेख आदि



आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
जी द्वारा लिखित ये दो लेख
'पौराणिक गणेश' और
'गणपति की यथार्थता' को
अवश्य पढ़ें!

लेख पढ़ने के लिए लेखों के नाम पर क्लिक करें। कई अन्य विषयों पर विडियोज़ के लिए मोबाइल पर क्लिक करें व **Vaidic Physics** YouTube channel को subscribe करें!

www.vaidicphysics.org

 /vaidicphysics



गणपति के आध्यात्मिक, सामाजिक व वैज्ञानिक अर्थों
को समझने के लिये उपरोक्त मोबाइल पर क्लिक करें
और **सत्य संवाहक** की यह वीडियो अवश्य देखें!

 / SatyaSamvahak

ऐसे अन्य लेखों के लिए नीचे दी गई IDs पर क्लिक करके
सनातन अनुसंधान संगठन (SRO) को Follow करें ↴

 /sanatan_research_org

 /SanatanResearchOrg



इस पुस्तक को Rating/Feedback

देने के लिये यहाँ क्लिक करें!



सत्य संवाहक • वैदिक फ़िज़िक्स • सनातन अनुसंधान संगठन

@SatyaSamvahak

@vaidicphysics

@sanatan_research_org